पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''और जिसने नेकी की है चाहे वह मर्द हो या औरत और वह ईमानदार हो तो यह लोग जन्नत में जाएंगे और वहाँ बेशुमार रोज़ी पायेंगे'' (सूरे मोमिनः ४०)

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नैतिक शिक्षा

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (पैग़म्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि किस चीज़ की वजह से लोग ज़्यादा जन्नत में जायेंगे, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह से डर और अच्छे चरित्र की वजह से, पूछा गया कि किस वजह से लोग ज्यादा जहन्नम में जाएंगे पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुबान और शर्मगाह (गुप्तांग)

आप पूरे संसार वालों के लिये दयालू कृपालू और अध्यापक एवं प्रशिक्षक बना कर भेजे गये थे। आप का पवित्र जीवन चाहे वह नबी बनाये जाने से पहले का हो या नबी बनाए जाने के बाद, हर क्षण मानवता को मार्गदर्शन करते हैं यही वजह है कि जब माई आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा से आप के चरित्र, नैतिकता और व्यवहार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमाया आप का चरित्र और नैतिकता कुरआन था यानी आप का जीवन कुरआन का व्यवहारिक आदर्श और रूप था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसी आदर्श को अपनाने में दुनिया व आखिरत की भलाई व कामयाबी है और इसी चरित्र के सहारे हम दुनिया वालों के सामने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद की सच्ची छवि पेश कर सकते हैं, जो लोग हमें नफरत की निगाह से देखते हैं हम इसी चरित्र और अच्छे व्यवहार के बलबूत उनको अपने से करीब और उनको अपना समर्थक बना सकते हैं। क्योंकि सदाचार और नैतिकता के अन्दर अल्लाह ने वह प्रभाव रखा है जिस का ऐतराफ बड़े बड़ों ने किया और इस्लाम की खूबियों को स्वीकार किया है। बुखारी में आप के चरित्र को इन शब्दों में बयान किया गया है कि आप न तो बुरे स्वभाव के हैं, न सख्त स्वभाव के, न ही बाज़ारों में शोर व हंगामा करते हैं और न ही बुराई का जवाब बुराई से देते हैं बल्कि मआफी का मामला करते हैं। आप के सेवक हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं आप की आदतें सब लोगों से अच्छी थीं और स्वयं पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से सबसे बेहतर वह है जिस की आदतें सबसे अच्छी हों अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण व व्यवहार को अपनाएं और इसको जन्नत में जाने का माध्यम बनाएं। आप को नबी बनाया जाने से पहले सच्चा और एमानतदार कहा जाता था। आप ने अपने चरित्र एवं व्यवहार से लोगों को प्रभावित किया और हर एक के दुख दर्द के साथी बने रहे। नबी बनाये जाने के बाद जब आप पर अल्लाह की तरफ से पहली वह्य (प्रकाशना) अवतरित हुई तो आप परेशान हो गये लेकिन आप की जीवन साथी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहो अन्हा ने आप को तसल्ली देते हुए कहा ''हर्गिज़ नहीं आप खुश हो जाएं अल्लाह की क़सम अल्लाह तआला आप को कभी रूस्वा नहीं करेगा, अल्लाह की क़सम आप तो रिश्ता नाता जोड़ते हैं, सच बोलते हैं, लोगों का बोझ सहन करते हैं जरूरतमन्द को कमा कर देते हैं, मेहमाननवाज़ हैं और हक़ के मामले में डट कर मदद करते हैं, उपर बयान की गई हदीस में उसी चरित्र का बयान है जो जन्नत में ले जाने का सबब बनेगा। एक मौक़े पर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अच्छे स्वभाव और चरित्र वाला इन्सान रोज़ेदार और रात में इबादत करने वाले के स्थान को पा लेता है। अल्लाह से दुआ है कि वह हमें अच्छे आचरण वाला बनाएं। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

अप्रैल 2023 वर्ष 34 अंक 4

शव्वालुल मुकर्ररम 1444 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	पैग़म्बर मुहम्मद स० की नैतिक शिक्षा	2
2.	भ्रम और इस्लाम	4
3.	अपनी औलाद को बचा लें	5
4.	पवित्र क़ुरआन की फ़ज़ीलत	6
5.	क़ुरआन एक चमत्कार	8
6.	मुहम्मद स० की बच्चों से मुहब्बत...	11
7.	प्रेस रिलीज़	13
8.	दहेज की रोक थाम कैसे की जाये	14
9.	इस्लाम की शिक्षायें और सिद्धांत	21
10.	इस्लाम में पशुओं के अधिकार	24
11.	सूरेह फ़ातिहा का अर्थ	26
12.	अपील	27
14.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- www.ahlehadees.org

सम्पादकीय

भ्रम और इस्लाह

नौशाद अहमद

धर्म के बारे में कुछ गलत फहमी ज्ञान न होने की वजह से होती है और कुछ लापरवाही की वजह से है, दोनों सूरतों में गलत फहमी इन्सान के लिये हानिकारक है। आज भी एक गलत फहमी साधारण सी बात है कि लोग यह समझते हैं कि मौत के बाद सभी दुख दूर हो जाते हैं जबकि हक़ीकत इसके बिल्कुल विपरीत है। मौत के बाद इन्सान की शाश्वत ज़िन्दगी शुरू होती है। कहने का अर्थ यह है कि इन्सान जिस मौत को सुख समझ रहा था वास्तव में ऐसा नहीं था अर्थात जीवन एक परीक्षा है और मरने के बाद की ज़िन्दगी उसके इस सांसारिक जीवन का फल और परिणाम। इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि इस संसार में कितने लोग गलत फहमी में जी रहे हैं, उनको अपने जीवन का उददेश्य नहीं मालूम है वह समझ रहे हैं कि वह इस दुनिया में यूं ही रह रहे हैं और यूं ही इस दुनिया से रूख्सत हो जाएंगे जबकि यह सोच निराधार है, महज ख्याल और संकल्पना पर आधारित है ऐसा सोच कर कोई भी अपने गलत कर्मों के बुरे परिणाम से बच नहीं सकता है। अल्लाह ने इन्सान को जो बुद्धि दी है वह इसी लिये दी है कि वह अच्छे और बुरे में अन्तर करके अपने जीवन को सफल बनाए।

इन्सान धर्म के बारे में लापरवाह होता जा रहा है वह अपनी तिजारत को कामयाब बनाने के लिये अंथक मेहनत करता है अपनी पूरी पूंजी को दांव पर लगा देता है लेकिन एक ऐसी दुनिया के बारे में अत्यन्त गफलत का शिकार है जहां उसे शाश्वत जीवन मिलेगा और इसके बाद उसको अच्छे कर्म का अवसर नहीं मिलेगा।

दूसरों की इस्लाह और सुधार करने की संकल्पना हर दौर में रही है सुधार का काम इस्लाम की तालीमात और दृष्टिकोण का एक हिस्सा है और यह दृष्टिकोण इन्सान के अन्दर सकारात्मक बदलाव लाता है। सकरात्मक बदलाव का मतलब है कि इन्सान बुराई की दुनिया से निकल कर नेकी की दुनिया में आ जाए उसका मन विचार अल्लाह के आदेशों के अनुसार हो जाए, उसकी सोच यह बन जाए कि नेकी करने से स्वर्ग मिले गा और बुराई करने से दण्ड अर्थात नरक मिलेगा यही शिक्षा बिगड़े इन्सान को सही दिशा में ले जाने की पूरी क्षमता रखती है और चरित्र को ऐसा चरत्रि बनाती है जो उसके लिये सम्मान और कामयाबी के रास्ते को खोल देती है, विपरीत दिशा में जाने से नुकसान ही नुकसान है, मालूम हुआ कि इन्सान को इस जीवन में गफलत और भ्रम में नहीं पड़े रहना चाहिए मौत के बाद की जिन्दगी के बारे में सचेत रहना चाहिए और सुधार का काम होते रहना चाहिए लेकिन सुधार का हर काम कानून और धर्म के दायरे में होना चाहिए।

अपनी औलाद को बचा लें

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी,पटना

जब कोई अपने आप को मुसलमान कहता है तो उस शख्स पर इस्लाम की तरफ से कुछ जिम्मेदारियां लागू होती हैं। उन ज़िम्मेदारियों में से एक ज़िम्मेदारी यह भी है कि वह अपने आप को अपनी फेमिली को नरक की आग से बचाने की कोशिश करे जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ।'' (सूरे तहरीम-७)

यही वजह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बार बार अपनी उम्मत को इस नरक से डराया है और इस से बचने पर ज़ोर दिया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की सभा में फरमायाः मैं तुम्हें जहन्नम की आग से डराता हूं और आप इस की स्थिति बता रहे थे कि चादर आप के शरीर से गिर कर आप के पांव पर पहुंच गई। (सुनन दारमी, २/२३७)

याद रखें, जितना ज़्यादा आखिरत (मरने के बाद के जीवन) पर, जन्नत पर, जहन्नम पर हमारा ईमान होगा उतना ही हम जहन्नम से बचने की चिंता करेंगे। इस लिये सबसे पहले अपने और अपने परिवार वालों को जहन्नम की आग से बचाने के लिये अपने ईमान को और परिवार वालों के ईमान को बचाने की कोशिश करें ईमान बचेगा तो हम जहन्नम से सुरक्षित रहेंगे। जन्नत के पात्र बनेंगे, हमारे कर्म कुबूल होंगे और अल्लाह की खुशी की प्राप्ति के पात्र होंगे। अल्लाह ने अगर हमें औलाद की नेमत दी है तो यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम उनका धार्मिक तरीके से प्रशिक्षण करें, ज्ञान दें, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा से मुहब्बत का जजबा पैदा करें। उसके कैरेक्टर को मजबूत बनाएं पैगम्बर हज़रात अपनी औलाद की सही तर्बियत (प्रशिक्षण) की चिंता और कोशिश किया करते थे। हज़रत इसमाईल अलैहि० अपने घर वालों को इबादत की तरफ ध्यान दिलाया करते थे जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः वह अपने घर वालों को बराबर नमाज़ ज़कात का हुक्म देता था। और था भी अपने परवरदिगार की बारगाह में पसन्दीदा और मक़बूल'' (सूरे मरयमः५५)

इसलिये बच्चों के सिलसिले में अपनी ज़िम्मेदारियों को समझें और इन्हें अदा करने की चिंता करें ताकि वह इस दुनिया में आप के लिये राहत का सामान बनें और इस दुनिया में भी उनकी नेक दुआएं आप के दर्जे को बुलन्द कर सकें याद रखें, अगर मां बाप ने अपनी अच्छी संगत से अपनी इच्छाओं को कुर्बान करके नेक राहों पर चल कर अपने बच्चों को नेक नहीं बनाया तो दूसरे बाहर के बिगड़े माहौल बुरी संगत उनको बुरा बना देगी अगर मां बाप धतूरा बुरे हों तो बच्चे गुलाब नहीं बन सकतें। बुरे संगत से प्रभावित होना इन्सान की कमज़ोरी है।

पवित्र कुरआन की फ़ज़ीलत (1)

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

१. कुरआन को पढ़ने और पढ़ाने वाले सबसे बेहतर

उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''तुम में सबसे बेहतर वह है जो कुरआन पढ़ता और पढ़ाता है'' (सहीह बुखारीः५०२७)

२. सूरे बक़रा की आख़िरी दो आयतों की फ़ज़ीलत

नौमान बिन बशीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह ने ज़मीन और आसमान पैदा करने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी, इस किताब की दो ऐसी आयतें नाज़िल फरमाई जिन दोनों आयतों पर सूरे बक़रा को ख़तम किया जिस घर में यह दोनों आयतें (लगातार) तीन रातें पढ़ी जायें गी तो शैतान उस घर के क़रीब नहीं आ सकता'' (सुनन तिर्मिज़ी २८८२, शैख़ अलबानी ने इसे सहीहुत तरगीब वत तरहीब : १४६७ में सहीह क़रार दिया है)

सूरे बक़रा की आख़िरी दोनों आयतों का अनुवादः रसूल ईमान लाया उस चीज़ पर जो उसकी तरफ अल्लाह तआला की जानिब से उतरी और मोमिन भी ईमान लाये। यह सब अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाये। उस के रसूलों में से हम किसी में अन्तर नहीं करते। उन्होंने कह दिया कि हम ने सुना और अनुसरण किया। हम तेरी क्षमायाचना मांगते हैं। ऐ हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह तआला किसी जान को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ नहीं देता जो नेकी वह करे वह उसके लिये और जो बुराई करे वह उस पर है। ऐ हमारे रब! अगर हम भूल गये हों या ख़ता की हो तो हमें न पकड़ना। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हम से पहले लोगों पर डाला था। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिस की हमें ताक़त न हो और हम से दरगुज़र फरमा और हमें बख़्श दे और हम पर दया कर। तू ही हमारा मालिक है। हमें काफ़िरों की क़ौम पर ग़लबा अता फरमा। (सूरे बक़रा २८५-२८६)

आयतुल कुर्सी शैतान से बचाव का प्रभावी हथियारः

सैयदना अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे रमज़ान की ज़कात की हिफाज़त पर मुकर्रर फरमाया। रात में एक शख़्स अचानक मेरे पास आया और गल्ला में से लप भर भर कर उठाने लगा मैंने उसे पकड़ लिया और कहा कि क़सम अल्लाह की! मैं तुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में ले चलूं गा। इस पर उसने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं सख्त मुहताज हूं। मैं बाल बच्चे वाला और ज़रूरत मन्द हूं अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो ने कहाः (उसके कारण बताने पर तरस खाकर) मैंने उसे छोड़ दिया। सुबह हुई तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से पूछा अबू हुरैरह! पिछली रात तुम्हारे क़ैदी

ने क्या किया था? मैंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! उसने सख़्त ज़रूरत और बाल बच्चों का रोना रोया, इसलिये मुझे इस पर रहम आ गया और मैंने उसे छोड़ दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वह तुम से झूठ बोल कर गया है और वह फिर ज़रूर आयेगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस फरमान की वजह से कि वह ज़रूर आये गा मुझे इस बात पर पूरा यक़ीन था कि वह फिर ज़रूर आयेगा। इसलिये मैं उसकी ताक़ में लगा रहा और जब वह दूसरी रात आया और गल्ला उठाने लगा तो मैंने उसे दोबारा पकड़ लिया और कहा कि अब मैं तुझे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में ज़रूर पेश करूंगा, लेकिन अब भी उसकी वही गुज़ारिश थी कि मुझे छोड़ दो। मैं सख्त मुहताज हूं। बाल बच्चों का बोझ मेरे कांधों पर है। अब मैं कभी न आऊंगा। मुझे रहम आ गया और मैंने उसे दोबारा छोड़ दिया। सुबह हुई तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहाः ऐ अबू हुरैरह! ऐ अबू हुरैरह! तुम्हारे क़ैदी ने क्या किया? मैंने कहाः या रसूलुल्लाह! उसने फिर उसी सख़्त ज़रूरत और बाल बच्चों का रोना रोया जिस की वजह से मुझे इस पर रहम आ गया। इसलिये मैंने उसे छोड़ दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस मर्तबा भी यही फरमाया कि वह तुम से झूठ बोल कर गया है और वह फिर आयेगा। तीसरी मर्तबा मैं फिर उसके इन्तेज़ार में था कि उसने फिर तीसरी रात आकर गल्ला उठाना शुरू किया। मैंने उसे फिर से पकड़ लिया और कहा कि तुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में पहुंचाना अब ज़रूरी हो गया है। यह तीसरा मौक़ा है। हर मरतबा तुम कहते रहे कि अब तुम नहीं आओगे। लेकिन तुम अपनी हरकत से बाज़ नहीं आये। उसने कहा कि अगर इस बार मुझे छोड़ देंगे तो मैं आपको ऐसे कलिमात सिखाऊंगा जिससे अल्लाह तआला आप को फाइदा पहुंचायगा। मैंने पूछाः वह कलिमात क्या हैं? उसने कहा, जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने लगो तो आयतुल कुरसी पढ़ लिया करो। एक मुहाफिज़ फरिश्ता अल्लाह तआला की तरफ से बराबर तुम्हारी हिफ़ाज़त करता रहेगा और सुबह तक शैतान तुम्हारे पास हरगिज़ नहीं आ सकेगा। इस मरतबा भी मैंने उसे छोड़ दिया। सुबह हुई तो एक बार फिर से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछाः पिछली रात तुम्हारे क़ैदी ने तुम से क्या मामला किया? मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! उसने मुझे चन्द कलिमात सिखाये और भरोसा दिलाया कि अल्लाह तअला मुझे इससे फाइदा पहुंचायेगा। इसलिये मैंने उसे छोड़ दिया। आप ने पूछा कि वह कलिमात क्या हैं? मैंने अर्ज़ किया कि उसने बताया था कि जब बिस्तर पर लेटो तो आयतुल कुरसी पढ़ लो, उसने मुझ से यह भी कहा कि अल्लाह तआला की तरफ से तुम पर (उसके पढ़ने से) एक मुहाफिज़ फरिश्ता तैनात रहेगा और सुबह तक शैतान तुम्हारे क़रीब भी नहीं आ सकेगा। सहाबा खैर को सबसे आगे बढ़ कर लेने वाले थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (उनकी यह बात सुनकर) फरमाया कि अगरचे वह झूठा था लेकिन तुम से यह बात सच कह गया है। ऐ अबू हुरैरा! तुम को यह भी मालूम है कि तीन रातों से तुम्हारा सामना किस से हो रहा था? उन्होंने कहा नहीं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह शैतान था। (सहीह बुखारी २३११)

कुरआन एक चमत्कार

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

यह अन्तिम ईश-ग्रन्थ है, जो अन्तिम नबी मुहम्मद पर तेईस वर्षों के अन्तराल में उतरा। सबसे पहले तो यह नबी स० के हृदय पर नक्श (अंकित) हो जाता था, फिर आप के बताने पर आपके साथी सहाबा याद कर लेते थे, और नबी स० ही की आज्ञा से इसको विभिन्न वस्तुओं पर लिख लिया जाता था। फिर जब अबू बक्र ख़लीफा बनाए गए तो उन्होंने विभिन्न चीज़ों पर लिखे हुए कुरआन के अंशों को इकटठा करवाया और एक ग्रन्थ की बहुत-सी प्रतियां बनवाईं और उन्हें पूरी इस्लामी दुनिया में भिजवा दिया। और आज तक उसी प्रति के अनुसार कुरआन प्रकाशित होता है। इस प्रकार अल्लाह तआला ने कियामत तक के लिए इसे परिवर्तित होने से बचा लिया और सुरक्षा की जिम्मेदारी लेते हुए फरमाया।

''निस्सन्देह कुरआन हमने ही उतारा है और निसन्देह हम ही उसके रक्षक हैं'' (कुरआन सूरा-१५, अल हिज्र आयत-९)

कुरआन अब संसार में एकमात्र ईश्वरीय ग्रन्थ है, जो अब तक सुरक्षित है और क़ियामत तक सुरक्षित रहेगा। इससे पूर्व ग्रन्थ उतरे थे, उनमें बहुत कुछ फेर-बदल हो चुके हैं।

कुरआन जब पहले-पहल लिखा गया तो उसमें मात्राएं (आराब) नहीं थीं। क्योंकि अरबी भाषियों को इसकी ज़रूरत नहीं थी। लेकिन जब इस्लाम अरब से निकलकर अजम तक फैल गया और अजमियों को मात्राओं के बिना कुरआन पढ़ने में कठिनाई होने लगी तो उस समय के खलीफा अब्दुल मलिक बिन मररवान जो सन ६५ हिजरी में खलीफा बने ने एक भाषाविद अबुल असवद दुवली जिनका देहान्त सन ६९ हिजरी में हुआ, को आदेश दिया कि वे कुरआन में मात्राएं लगा दें ताकि पढ़ने में गलतियां न हों। इस प्रकार अल्लाह ने कुरआन को गलत पढ़ने से भी बचा लिया। फिर जब प्रिंटिंग प्रेस आ गई तो कुरआन संसार के कोने कोने से प्रकाशित होने लगा। इस समय कुरआन का सबसे बड़ा प्रिंटिंग प्रेस मदीना सऊदी अरब में है। उसका नाम शाह फहद कुरआन प्रेस संस्थान है, जिसकी स्थापना ३० अक्तूबर १९८४ में हुई, जहां से सन २००० ई तक कुरआन की डेढ़ करोड़ से भी अधिक प्रतियां प्रकाशित हो चुकी थीं। इसी प्रकार उस संस्थान से सन १९९९ ई. तक निम्नलिखित २९ भाषाओं में कुरआन का अनुवाद प्रकाशित हो चुका था।

उर्दू, स्पेनिश, अलबीनी, इंडोनेशियाई, अंग्रेज़ी, अनको, उरामी, इगेरिया, बराहोइया, पश्तो, बंगाली, बर्गी, बुस्ती, तमिल, थाइलैंड, तुर्की, जूलो, सोमाली, चीनी, फारसी, फ्रांसीसी, काजाकी, कश्मीरी, कोरी, मक्दूनी, मलेबारी, होसा, पूरबा और यूनानी।

किसी धार्मिक ग्रन्थ के विषय में कोई राय बनाने तथा उसे स्वीकार करने से यह देखना चाहिए कि वह स्वंय अपने विषय में क्या कहता हैं कुरआन अपने विषय में कहता है।

१. यह अल्लाह की ओर से उतारा गया है।

''ऐ नबी कहो यह कुरआन मेरी ओर वह्य किया गया है, ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें और जिस तक

यह पहुंचे सबको सचेत करूं''। (सूरा-६ अल अनआम आयत-१९)

''ऐ नबी हम ही ने अत्यंत व्यवस्थित ढंग से तुम पर कुरआन उतारा''। (सूरा-७६, अद दहर, आयत-२३)

''क्या इन लोगों के लिए यह काफी नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी, जो इन्हें पढ़कर सुनाई जाती है। निश्चय ही इसमें ईमानवालों के लिए दयालुता तथा अनुस्मृति है।'' (सूरा-२९, अल अनकबूत आयत-५१)

''यह किताब हमने तुम्हारी ओर सत्य के साथ उतारी है, अतः तुम अल्लाह ही की इबादत (उपासना) करो, धर्म को उसके लिए विशुद्ध करते हुए अर्थात उपासना में उसके साथ किसी को साझी न बनाओ''। (सूरा-३९, अज़ जुमर आयत-२)

''इस कुरआन की तुम्हारी ओर प्रकाशना करके, इसके द्वारा हम तुम्हें एक बहुत ही अच्छा बयान सुनाते हैं, यद्यपि इससे पहले तुम बेखबर थे''। (सूरा-१२, यूसुफ आयत-३)

''हमने तुम्हें बार-बार दोहराने वाली सात आयतें तथा यह कुरआन दिया'' (सूरा-१५, अल हिज्र आतय-८७)

''तुमको कुरआन, जो तत्वदर्शी तथा ज्ञानवाला है, अल्लाह की ओर से दिया जा रहा है''। (सूरा-२७ अन नम्ल आयत-६)

इससे पता चलता है कि कुरआन अल्लाह की किताब है। इस समय संसार में कुरआन के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रन्थ नहीं है जो स्पष्ट रूप से अल्लाह की किताब होने का दावा कर सके, बल्कि अल्लाह ने तो नबी स० को भी चेतावनी दी है कि अगर तुमको अपनी ओर से कोई बात कुरआन से संबद्ध करके कहने की कोशिश की होती तो हम तुम्हारा हाथ पकड़ लेते, और तुम्हारी गर्दन की रग काट देते। (सूरा-६९, अल हाक्का, आयत-४५)

इससे मालूम हुआ कि पूरा कुरआन अल्लाह की ही ओर से है। इसलिए एक स्थान पर तो कुरआन ने यह दावा भी किया कि नबी जो कुछ कहते हैं वह वह्य के द्वारा ही कहते हैं। (कुरआन सूरा-५३ अन नज्म आयत-३)

कुरआन एक चमत्कार

२. कुरआन एक ऐसा चमत्कारपूर्ण ग्रंथ है कि समस्त मनुष्य मिलकर भी वैसा ग्रन्थ नहीं ला सकते ''कह दो यदि मनुष्य और जिन्न इसके लिए इकटठा हो जाएं कि इस कुरआन जैसी कोई चीज़ लाएं तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे। चाहे वे परस्पर एक दूसरे के सहायक ही क्यों न बन जाएं '' (सूरा-१७, बनी इसराईल, आयत-८८)

कुरआन ने यह चैलेंज उन लोगों को किया था जो अपने आपको अरबी भाषा का महान विद्वान समझते थे। उनके मुक़ाबले में नबी अनपढ़ थे। फिर भी वे कहते थे कि यह सब मुहम्मद अपनी ओर से लाते हैं। इसपर कुरआन में यह चैलेंज किया गया कि तुम और जिन्न मिलकर भी क्या ऐसा कुरआन ला सकते हो? उत्तर यही रहा कि नहीं ला सकते। फिर कुरआन ने केवल दस सूरतें लाने के लिए चैलेंज किया।

''क्या वे कहते हैं, उसने इसे स्वयं गढ़ लिया है। कह दो, अच्छा तुम इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ, और अल्लाह के अतिरिक्त जिस किसी को चाहो बुला लो, यदि तुम सच्चे हो''। (सूरा-११, हूद, आयत-१३)

जब वे दस सूरतें लाने में भी असफल रहे तो फिर कुरआन ने केवल एक सूरा लाने का चैलेंज किया।

''यदि तुम उस चीज़ के विषय में, जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, संदेह में हो तो उस जैसी एक सूरा लाकर दिखा दो, और अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिसे चाहो अपनी सहायता के लिए बुला लो, यदि तुम सच्चे हो''। (सूरा-२, अल बकरा आयत-२३)

लेकिन वे इस चैलेंज का भी जवाब न दे सके। इससे कुरआन का महा चमत्कार होना और अल्लाह की ओर से वह्य होना भी, सिद्ध हो गया। कुरआन की विशेषता ३. कुरआन में शिफा (आरोग्य) और रहमत दयालुता है।

हम जो कुरआन में उतारते हैं इसमें ईमान लाने वालों के लिए शिफा (आरोगय) और (दयालुता) है, और अत्याचारियों के लिए उसमें घाटा ही है। (सूरा-१७, बनी इसराईल आयत ८२)

अर्थात कुरआन हर प्रकार के मानसिक तथा शारीरिक रोगों से मुक्ति प्रदान करता है इसलिए आवश्यक है कि उस पर ईमान लाया जाए, हृदय में उसे बसाया जाए उसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जाए। जो लोग उस पर ईमान नहीं लाते, बल्कि उसके ईश्वरीय होने को झुठलाते हैं ऐसे लोगों के लिए घाटा ही घाटा है, न तो वे संसार में उससे कोई लाभ उठा सकेंगे, न प्रलय के दिन। इस प्रकार इसके द्वारा वे न तो अपने हृदय का रोग दूर कर सकेंगे और न शरीर का। कुरआन में आया है।

''और जब कोई सूरा उतारी जाती है तो कुछ लोग यह पूछते हैं कि इस सूरा ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया? तो जो लोग ईमान लाए इस सूरा ने उनके ईमान को बढ़ाया है और वे प्रसन्न हो उठे, और जिनके हृदयों में रोग है इस सूरा ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और वह कुफ्र की अवस्था में ही मर गए''। (सूरा-६, अत तौबा आयतें १२४.१२५)

कुरआन की भाषा

कुरआन को अल्लाह ने अरबी भाषा में उतारा, क्योंकि यह जिसपर उतारा गया था वे अरबी भाषी थे। उनके प्रथम संबोधित भी अरबी भाषी लोग ही थे। इसलिए किसी और भाषा में यह उतरता तो उन लोगों को इसे समझने और स्वीकार करने में बड़ी कठिनाई होती।

''और इसी प्रकार ऐ नबी हमने तुम्हारी ओर अरबी में कुरआन वह्य किया''। (सूरा ४२ अश-शूरा आयत-७)

''यदि हम इसे गैर अरबी कुरआन बनाते तो वे लोग कहते, इसकी आयतें क्यों नहीं हमारी भाषा में खोल खोल कर बयान की गईं? यह क्या कि वाणी तो गैर अरबी है और व्यक्ति अरबी'' (सूरा-४१ हा मीम अस सजदा आयत-४४)

''यह वह पुस्तक है जिसकी आयतें खोल खोल कर बयान हुई हैं, अरबी कुरआन के रूप में उन लोगों के लिए जो जानना चाहें''। (सूरा-४१ हा-मीम अस सजदा आयत ३)

''ऐ मुहम्मद हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों के लिए शुभ सूचना देने वाला तथा सचेत करने वाला बनाकर भेजा है, परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं''। (सूरा-३४, सबा आयत-२८)पवित्र कुरआन शुभसूचना देने वाला उनके लिए है, जो इसके आदेशों का पालन करते हैं और सचेत करने वाला उनके लिए है जो इसे ठुकरा दें। यह कहना ठीक नहीं कि कुरआन में जेा कुछ आया है उससे मेरा क्या सम्बन्ध ये वे लोग हैं जो कुरआन की वास्तविक्ता को समझते नहीं बस इनके लिए परलोक में यातना ही यातना है। और ग्रहण करने वालों के लिए स्वर्ग और उसकी नेमतें। **कुरआन की इन्साइक्लोपीडिया स**

मुहम्मद सल्ल० की बच्चों से मुहब्बत, व्यवहार और उनका प्रशिक्षण

हज़रत अनस रज़ि० फरमाते हैं रसूले अकरम सल्ल० सारे लोगों से बढ़कर बच्चों और घर वालियों पर रहम फरमाने वाले थे। इसे इब्ने असाकिर ने रिवायत किया है। (सहीह)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत हसन बिन अली रज़ि० का बोसा लिया। आप सल्ल० के पास हज़रत अक़रा बिना जाबिस रज़ि० बैठे थे, कहने लगे मेरे दस बेटे हैं मैंने उनमें से कभी किसी का बोसा नहीं लिया रसूलुल्लाह सल्ल० ने उनकी तरफ देखा और फरमाया जो दूसरों पर दया नहीं करता उस पर अल्लाह की तरफ से भी दया नहीं की जाती। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने एक पैदा होते बच्चे को अपनी गोद में बिठाया और उसकी तहनीक की, बच्चे ने आप सल्ल० पर पेशाब कर दिया। आप सल्ल० ने पानी मंगवाकर उस पर बहा दिया। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रजि० कहती हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने हज़रत उसामा रज़ि० की नाक साफ करने का इरादा फरमाया तो मैंने अर्ज़ किया मैं किए देती हूं। आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया आइशा! मैं इससे मुहब्बत करता हूं तू भी इससे मुहब्बत कर। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (हसन)

हज़रत अनस रजि० फरमाते हैं रसूले अकरम सल्ल० अन्सार से मुलाक़ात के लिए तशरीफ ले जाते तो उनके बच्चों को सलाम करते और उनके सरों पर मुहब्बत से हाथ फेरते। इसे इब्ने हिब्बान ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया मैं कभी कभी नमाज़ शुरू करता हूं तो चाहता हूं कि लम्बी नमाज़ पढ़ूं, लेकिन अचानक किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूं तो अपनी नमाज़ संक्षिप्त कर देता हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि बच्चे के रोने से मां के दिल पर कैसी चोट पड़ती है। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं एक देहाती नबी अकरम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ आप सल्ल० को बच्चों से प्यार करते हुए देखकर कहने लगा आप भी बच्चों को चुंबन लेते हैं, हम तो नहीं लेते आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया अगर अल्लाह तआला ने तेरे दिल से शफक़त निकाल ली है तो मैं क्या कर सकता हूं। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस रजि० कहते हैं मेरी मां मुझे नबी अकरम सल्ल० के पास लेकर हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल० यह मेरा बेटा अनस है मैं इसे आपकी सेवा के लिए लाई हूं, इसके लिए अल्लाह तआला से दुआ फरमाएं।

आप सल्ल० ने अनस रजि० को दुआ दी या अल्लाह! इसके माल और औलाद में वृद्धि फरमा। हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं मेरे पास ढेरों माल है और सौ से ज़्यादा पोते और पोतियां हैं। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया हैं

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० हमारे साथ घुल मिल जाते यहां तक कि मेरे छोटे भाई से एक बार आप सल्ल० ने फरमाया ऐ अबू उमैर! नुगैर (सुर्ख चोंच वाली चिड़िया) ने तुम्हारे साथ क्या किया? हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं मेरे भाई के पास एक चिड़िया थी जिससे वह खेलता था और वह मर गई तब आप सल्ल० ने अबू उमैर का ग़म दूर करने के लिए यह बात इरशाद फरमाई। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० अपनी एक रान पर मुझे बिठा लेते और दूसरी रान पर हज़रत हसन रज़ि० को बिठा लेते फिर दोनों को अपने सीने से चिमटा लेते और दुआ फरमाते या अल्लाह! मैं इन पर दया करता हूं तू भी इन पर दया फरमा इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस रजि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हज़रत ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा रजि० के साथ खेलते और उन्हें प्यार से बार बार या जुवैनब या जुवैनब कहकर बुलाते।

हज़रत उम्मे खालिद रज़ि० कहती हैं मैं अपने बाप के साथ रसूलुल्लाह सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुई मैंने ज़र्द रंग की क़मीज़ पहन रखी थी। रसूलुल्लाह सल्ल० ने देखा तो फरमाया वाह वाह! अब्दुल्लाह हदीस के रावी कहते हैं कि यह हबशी ज़बान का शब्द है। उम्मे खालिद कहती हैं मैंने जाकर आप सल्ल० की मुहरे नुबुवत से खेलना शुरू कर दिया। मेरे बाप ने मुझे डांटा। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया इसे खेलने दो। फिर आप सल्ल० मेरी तरफ घूमे और मुझे यह दुआ दी इसे खेलने दो। फिर आप सल्ल० मेरी तरफ घूमे और मुझे यह दुआ दी अल्लाह करे तुम यह कपड़ा पुराना करो और फ़ाड़ो अर्थात लम्बे समय तक इस्तेमाल करो पुराना करो और फाड़ो, पुराना करो और फाड़ो। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

हज़रत साइब बिन यज़ीद रजि० के आज़ाद किए गए नए गुलाम हज़रत अता रह० कहते हैं मैंने अपने आक़ा साइब बिन यज़ीद की दाढ़ी के बाल सफेद और सर के बाल सियाह देखे तो उनसे पूछा, आप के सर के बाल सफेद क्यों नहीं हुए? हज़रत साइब रज़ि० कहने लगे मेरे सर के बाल कभी सफेद नहीं होंगे इसकी वजह यह है कि मैं कमसिन (छोटा) था, लड़कों के साथ खेल रहा था नबी अकरम सल्ल० का गुज़र हुआ तो आप सल्ल० ने सब बच्चों को सलाम किया, बच्चों में से सिर्फ मैंने सलाम का जवाब दिया तो आप सल्ल० ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा तुम्हारा नाम क्या है? मैंने अर्ज़ किया साइब बिन यज़ीद इब्ने उख्त नमर (यह हज़रत साइब का लक़ब है) आप सल्ल० ने मेरे सर पर हाथ रखा और फरमाया अल्लाह तुझे बरकत दे। मेरा ख्याल है कि रसूलुल्लाह सल्ल० के हाथ वाली जगह के बाल कभी सफेद नहीं

होंगे। इसे तबरानी ने रिवायत किया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेरे सर पर अपना मुबारक हाथ रखा और फरमाया यह लड़का सौ साल ज़िंदा रहेगा। अतएव अब्दुल्लाह ने सौ साल की उम्र पाई। इसे बज्ज़ार ने रिवायत किया है।

हज़रत सहल बिन साद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० की सेवा में पीने की कोई चीज़ पेश की गई तो आप सल्ल० ने उससे कुछ पिया। आप सल्ल० के दायीं तरफ एक लड़का और बायीं तरफ उम्र रसीदा (बड़ी आयु) के लोग बैठे थे। रसूलुल्लाह सल्ल० ने उस लड़के से फरमाया क्या तुम इजाज़त देते हो कि मैं पहले उन लोगों को यह पानी दे दूं। लड़के ने कहा अल्लाह की क़सम! या रसूलुल्लाह सल्ल० मैं आपके झूठे में से अपना हिस्सा किसी को देना कभी पसन्द नहीं करूंगा। रसूलुल्लाह सल्ल० ने प्याला उसे थमा दिया। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

(फज़ाइल रहमतुल लिल आलमीन से संकलित अहादीस)

(प्रेस रिलीज़)

मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी के निधन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफ़ी का शोक सन्देश

दिल्ली १४ अप्रैल २०२३

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने अपनी एक प्रेस रिलीज में महान अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञानात्मक एवं साहित्यिक हस्ती, राबता आलमे इस्लामी जददा के संस्थापकीय सदस्य, विश्व प्रख्यात दीनी पाठशाला दारूल उलूम नदवतुल ओलमा लखनउ के सचिव, आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी के निधन पर गहरे रंज व गम का इज़हार किया है और उनके निधन को न केवल भारतीय मुसलमान बल्कि पूरी दुनिया का ज्ञानात्मक और साहित्यिक खसारा क़रार दिया है जो भरपूर जिन्दगी गुज़ार कर लम्बी बीमारी के बाद पिछले दिन लगभग चार बजे लखनऊ के एक हस्पताल में ६४ साल की आयु में निधन कर गये। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैही राजिऊन

सम्माननीय मौलाना को आधुनिक युग की महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध दीनी, इल्मी और साहित्यिक हस्तियों में उच्च स्थान प्राप्त था। हर विचार धारा में उन्हें सम्मान की निगाह से देखा जाता था और उनकी सेवाओं को सराहा जाता था।

मिल्ली मसाइल में दिलचस्पी, उनकी दूरदर्शिता, सियासी सूझबूझ और ज्ञान दोस्ती मश्हूर थी उन्हें अपनी बहुमूल्य सेवाओं की वजह से हमेशा याद किया जाता रहेगा।

सम्मानीय अमीर ने अपने शोक सन्देश में मौलाना के पसमांदगान और सभी संबन्धितों से हार्दिक शोक व्यक्त किया है। अल्लाह उनकी गलतियों को मआफ फरमाए, नेकियों को कुबूल करे, जन्नतुल फिरदौस का वासी बनाये, पसमांदगान को सब्र व संयम दे और नदवतुल ओलमा और बोर्ड को उनका अच्छा विकल्प अता फरमाये आमीन ***(प्रेस रिलीज़ सारांश)***

दहेज की रोक थाम कैसे की जाये

लेखकः मौलाना समर सादिक रियाजी

अनुवादः नौशाद अहमद

हमारे समाज में कुछ रिवाजों ने इस तरह घुसपैठ बना ली है कि इस्लाम की साफ सुथरी छवि भी धूमिल हो गयी। कुछ लोगों को छोड़ कर हर शख्स इन रस्मों में इस तरह फंस गया है कि उसने यह अन्तर ही मिटा दिया है कि इन रस्मों का इस्लाम से भी कोई संबन्धा है कि नहीं? बल्कि यह भी समझा जाने लगा है कि इस्लाम का इन रस्मों से कोई टकराव नहीं बल्कि उसके अनुकूल है। अफसोस तो इस बात पर है कि अवाम तो अवाम पढ़े लिखे लोगों पर भी इन रस्मों का ऐसा जादू चला कि वह भी, सही, और गलत में फर्क से महरूम (वंचित) हो गये। इस लेख में समय की एक बुरी रस्म दहेज की कुर्आन व हदीस और सहाबा के रहन सहन की रोशनी में समीक्षा की गयी है? इस बात पर ज्यादा जोर डाला और छान बीन की कोशिश की गयी है कि क्या वास्तव में इस का इस्लाम से कोई संबन्ध है।

अल्लाह कुर्आन में फरमाता है ''ऐ मोमिनो आपस में एक दूसरे का माल बातिल तरीकों से ना खाओ'' शब्द ''बातिल'' में जाल साज़ी, मक्कारी सूद और जोर जबरदस्ती की तमाम सूरतें शामिल हैं और जहेज़ भी माल समेटने का एक ऐसा तरीक़ा है जिसकी इस्लाम में कोई गुंजाइश नहीं है बल्कि जहेज़ के नाम पर एक दूसरे का माल खाने में जोर जबरदस्ती भी है और हीला और मक्कारी भी, रसूल स० के आदर्श से लापरवाही और सहाबा के तरीकों की तौहीन और दूसरों का अनुसरण भी है।

इसमें किसी का मतभेद (इख्तेलाफ) नहीं है कि जहेज़ की मांग बिलकुल हराम और अवैध है लेकिन क्या बिन मांगे जहेज के नाम पर मिलने वाला सामान सूफा, वाशिंग मशीन कूलर, फ्रीज साइकिल कार और कैश लेने की इजाज़त इस्लाम देता है। हम तमाम मुसलमानों के लिये जरूरी करार दिया गया है कि अपने तमाम मामलात में मुहम्मद स० के जीवन को माडल बनायें। जैसा कि अल्लाह फरमाता है ''तो जो लोग अल्लाह और क्यामत पर यकीन रखते हैं उनके लिये अल्लाह के रसूल मुहम्मद स० की जिंदगी में बेहतरीन नमूना है'' इसलिये मुहम्मद स० की जिंदगी का मुतालआ (अध्ययन) करते हैं कि क्या नबी स० ने अपनी लड़की दामाद या समधी को शादी के मौके पर कुछ दिया या खुद अपनी शादी के मौके पर बिन मांगे जहेज के नाम पर कुछ लिया? छिछोरपन पर उतरे कुछ लालची आरोप (इलजाम) लगाते हैं कि नबी स० ने हजरत फातिमा को उनकी शादी के मौके पर जमाने के अनुसार जहेज (दहेज) दिया था इसलिये अगर कोई शख्स अपनी खुशी से वक्त और जरूरत के मुताबिक गाड़ी घोड़ा रूपये पैसा देता है तो कोई हर्ज की बात नहीं है, यह आप पर और आप के इंसाफ पर बड़ा झूठा आरोप है। यह कैसे मुम्किन है कि इंसाफ वाहक मुहम्मद० स० फातिमा को जहेज का सामान दें और दूसरी बेटियों को इससे महरूम (वंचित) करें ऐसा वही कर सकते हैं जो अपने मकसद को पूरा करने के लिये जहेज के बैक ग्राउंड और

असबाब से मुंह फेरते हैं अथवा उपेक्षा करते हैं। हकीकत यह है कि आपने हज़रत फातिमा को उनकी शादी के मौके पर कुछ छोटी मोटी चीज़ें इस लिये दी थीं कि आप हजरत अली के सरपरस्त (अभिभावक) थे और हजरत अली के पास घर बसाने के लिये कुछ नहीं था आपने बाप की हैसियत से अली को घर बसने के लिये थोड़ी मोड़ी सामग्री (सामान) दिया था। मतलब यह है कि यह कुछ चीज़ें जिन्हें जहेज़ का नाम दिया जाता है फातिमा को नहीं बल्कि असल में हजरत अली को सहायता के तौर पर दिया था क्योंकि अगर आप ने फातिमा को जहेज दिया होता तो इंसाफ के मुताबिक अपनी तमाम बेटियों को जहेज देते। फर्ज की जिये अगर मुहम्मद स० ने अपने दामाद या बेटी को जहेज का कुछ सामान दिया था तो यह दलील पकड़ी जा सकती है कि अगर किसी का दामाद गरीब हो, परेशान हाल हो और बाप की छाया से महरूम (वंचित) हो तो उसको जहेज दिया जा सकता है लेकिन लोग ऐसे गरीब और बेमाल वालों के यहां शादी करने के लिये क्यों नहीं सोचते, उनकी निगाह ऊपर ही उठती है और इच्छा यह होती है कि कोई खाते पीते घराने का रिश्ता मिल जाये तो उसके यहां अपनी बेटी का रिश्ता लगा दें चाहे इसके लिये जमीन ही क्यों न बेचनी पड़े, कर्ज से दब जाना पड़े, तब भी पीछे नहीं हटेंगे। मेआर और कसौटी में कितना अंतर है। एक तरफ मुहम्मद स० एक गरीब परेशान हाल को सहारा देना चाहते हैं कि एब घर आबाद हो जाये और दूसरी तरफ खुशी के नाम पर जहेज इस लिये दिया जा रहा है कि उसकी बेटी ठाट बाट की जिंदगी गुजारे और हर तरफ से उसकी तरफ से दिये जाने वाले जहेज की खूब चर्चा हो जाये। अगर मुसलमान होने का दावा है तो क्यों नहीं नबी के जीवन को आदर्श बनाते और क्यों नहीं सलफे सालिहीन के नक्शे कदम पर चलना अपनी सफलता समझते। उनकी शादियों में परेशानी, ताम झाम और महीनों से तैयारी दूर दूर तक नजर नहीं आती है। रिश्ता पसंद हो जाने के बाद शादी हो जाती, लेन देन शादी में रूकावट नहीं बनता किसी गरीब की बेटी पैसा ना होने के सबब अपने बाप के घर बैठी बूढ़ी नहीं होती शादियों में नबी के आदर्श से मुंह मोड़ने का अंजाम हम भुगत रहे हैं। इबाहियत (जायज है, कोई गुनाह नहीं मिलेगा) का फितना समाज को खोखला कर रहा है। मुहम्मद स० ने सच फरमाया ''जब तुममें से कोई शादी का संदेश दे जिसकी दीनदारी और चरित्र से तुम राज़ी हो जाओ तो उसकी शादी कर दो, अगर ऐसा नहीं किया तो जमीन में फसाद (बिगाड़) पैदा हो जाये गा''।

यहां पर एक ऐसे शख्स की शादी का वर्णन (जिक्र) किया जा रहा है जिन्होंने मालदार होने के बावजूद बड़ी सादगी से अपनी शादी रचाई उस महान व्यक्ति का नाम अब्दुर्रहमान बिन औफ है। इनकी शादी की खबर नबी स० को भी नहीं हो पायी एक दिन आप की निगाह अब्दुर्रहमान बिन औफ पर पड़ी उनके कपड़े पर लगे जाफरानी रंग को देख कर पूछा तो कहा कि मैं शादी कर ली है, फिर आप ने पूछा कि महर कितनी दी है? उन्होंने कहा कि एक नवात सोना, इस पर सिर्फ इतना कहा कि वलीमा कर देना चाहे एक बकरी ही क्यों ना हो। यह नहीं पूछा कि जहेज के समान में क्या क्या मिला और ना यह शिकायत की कि तुम मुझे बारात क्यों नहीं ले गये। एक ऐसा आदमी जिस पर सहाबा जान निछावर करने के लिये तैयार रहेते थे, उनको बारात की

दावत ना देना हमको क्या पैगाम देता है? इसका मतलब यही ना हुआ कि नबी स० और सहाबा की शादियों में बारात का तसव्वुर ही नहीं था। आज कल अगर किसी करीबी रिश्तेदार ही नहीं बल्कि किसी आम आदमी को बारात की दावत ना दें तो मुंह लटका ले गा और सबसे शिकायत करता हुआ आपके वलीमे का बायकाट करेगा।

बारात पर जब आलोचना की जाती है और कहा जाता है कि चार छः लोग जाकर लड़की को ले आयें तो कुछ स्वार्थी लोग इस आलोचना का यह जवाब देकर बारात ले जाने का फतवा जारी करते हैं कि अगर कोई शख्स खुशी से बारात बुलाता और दावत खिलात है तो बारात पर बेतुका एतराज नहीं करना चाहिये, लेकिन दावत खिलाने का इतना शौक है तो गांव के सौ दो सौ गरीबों को दावत खिला कर या हर दिन दो चार गरीबों को खाना खिलाकर दावत खिलाने का शौक क्यों नहीं पूरा करता, क्या बारातियों को दावत खिलाने पर सवाब मिलेगा और गरीबों को खिलाने पर अजाब और फिर हमारा यह सवाल है कि आखिर चार छः लोगों को बारात जाने या ले जाने का सुबूत कहां से मिल गया? ऐसे लोग कुर्आन और हदीस का हवाला या सुबूत मांगते हैं! वही बतलायें कि हम बतलायें क्या? हमारा कहना है कि चार छः लोगों को खाना लिखाना किसी के लिये भी मुश्किल नहीं है चार छः लोगों का जाना फर्ज और वाजिब नहीं सिर्फ दुल्हा और उसका बाप चला जाये सिर्फ दुल्हा चला जाये या सईद बिन मुसय्यब की तरह दुलहन का बाप ही उसे दुल्हा के घर छोड आये। रही बात पचास साठ बारातियों की तो क्या कोई खुशी से यह अजाब सहने के लिये तैयार है, खुशी नहीं मजबूरियां सुख नहीं, बल्कि यह रस्म व रिवाज की मेहरबानी है कि खुशी के नाम पर वह बारात बुलवाने पर तैयार हो जाता है, लेकिन आम तौर से लड़के वाले दबाव डालते हैं हम इतने बाराती आयेंगे और बहुत से लड़के वाले इतने बेशर्म होते हैं जो खाने की मांग करने के अलावा अपने करीबी रिश्तेदारों के लिये वेदाई की भी मांग करते हैं यह मांग भी लड़की का सरपरस्त (अभिभावक) खुशी से सहन कर लेता है ऐसे लोग कितने घटिया और गिरे हुये हैं, यह दूसरे के गाढ़े पसीने की कमाई से शोहरत और नाम कमाना चाहते हैं आम तौर से देखने में आता है कि कई तरह के खाना खाकर लौटने वाले को सुबह अपने घर पर वलीमे में गोश्त की दो बोटियां भी नसीब नहीं होती, परेशान दिखायी देता है, ऐसा लगता है कि सारी खुशी और पैसे की रेल पेल लड़की के बाप को हासिल है और लड़के का बाप गम और बदनसीबी में घिरा हुआ है। और अगर वेदाई लेने की इतनी आरजू है तो लड़के का बाप लड़की के बाप को दस बीस हजार रूपये दे दे कि मेरे रिश्ते दारों को वेदाई दे देना खूब इज्जत मिल जायेगी मगर यहां शोहरत दूसरों की दौलत पर हासिल की जा रही है। कहने का मतलब यह है कि लड़की का बाप यह तमाम मुतालबा मजबूर होकर खुशी के नाम पर मान लेता है। उन खाते पीते घरानों का कोई एतबार नहीं होगा जो अपनी दौलत दिखाने के लिये बाारात लाने और जहेज भी देने की जिद करते हैं जब कि वह झूठे होते हैं उनको अपनी बेटी को विरासत का हक देने के बारे में कोई चिंता नहीं होती है और ना अपने बेटों को उन का हिस्सा देने की वसिय्यत करते हैं और भाइयों के कबजा करने के चलन को देखते हुये ना ही उनका हिस्सा दिलाने का कोई इंतेजाम करते हैं। एक ऐसी चीज

(बारात जहेज) जिसका इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं उसके लिये इसरार और सिफारिश करना और इस्लाम के एक हुक्म (वरासत) को पैरों तले रौंद डालना क्या दीन से लापरवाही नहीं है?

बारात ले जाने के पचधर ओलमा से एक सवाल करते हैं कि उन चोर बारातियों के खाने का हिसाब किस की गर्दन पर जायेगा जो बुलाये नहीं जाते मगर लड़के वाले उसे भी साथ ले लेते हैं। मिसाल के तौर पर यह तय होता है कि सौ बाराती आयें गे लेकिन २५ या ५० ज्यादा पहुंचते हैं अब वही बतायें कि इन २५ और ५० चोर बारातियों का हिसाब किस के जिम्मे होगा। लेकिन लड़की का बाप यह मुसीबत भी हंसी खुशी कुबूल कर लेता है और अगर इस को मानने से इंकार कर दे तो बात बिगड़ सकती है क्या खैरूल कुरून के मुसलमान बारात जैसी खुराफात से आगाह थे अगर यह नेकी और भलाई की बात होती तो वह यह काम करने के लिए बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते। कहने का मतलब यह है कि खुशी के नाम पर लड़की के सरपरस्त ही को हर बोझ बर्दाश्त करना पड़ता है जब कि लड़की के बाप का दिल बेटी को भेजने के तसव्वुर से ही चूर चूर हो जाता है, जो शख्स अपने दिल के टुकड़े को एक अंजानी जगह के लिये भेज रहा हो वह भला खुश क्यों होगा? खुश नहीं होता बल्कि अनेकों शंका और भय से दुखी होता है जिसका इजहार अपनी सजल (डबडबायी) आखों से करता है। खुश तो लड़का और उसका बाप होता है जो बगैर किसी मेहनत एक अनमोल चीज़ उनको मिल जाती है इसलिये लड़के वालों को लड़की के रिश्तेदारों और गांव वालों को अपने घर बुलाकर खाना खिलाना चाहिये ना कि लड़की वालों को, घरेलू सामान लड़के वालों की तरफ से लड़की के बाप को दिया जाना चाहिये ना कि लड़की के बाप की तरफ से। लड़की के बाप ने अपने दिल के टुकड़े को लड़के बालों के हवाले करके उन पर बड़ा उपकार किया है इस लिये लड़के वालों को इस उपकार (एहसान) का बदला कुछ ना कुछ देकर चुकाना चाहिये और लड़के के अपने घर वालों से जुदाई के बाद घर वालों को दुख होता है उसकी भरपाई के लिये कोशिश करनी चाहिये और लड़की को पैर की जूती ना समझ कर आंखों का तारा बनाना चाहिये। एहसान का बदला तो सिर्फ एहसान से ही दिया जा सकता है। लेकिन यहां तो मामला बिलकुल उलटा है कि वह लड़की भी दे रहा है और उसी को लूटा भी जा रहा है। जाहिलियत के दौर की तरह हमारे समाज में लड़कियों की हैसियत जूते चप्पल जैसी भी नहीं अगर कोई किसी को तोहफा के तौर पर एक जोड़ी चप्पल दे दे तो तोहफा देने वाले के लिये लेन वाला का दिल नर्मी और शुकिये के जजबात और भावना से भर जाता है लेकिन लड़की जैसी अनमोल चीज मिलने के बाद उससे अधिकृत चीजों की मांग करना इस बात की दलील है कि लड़कियों की हैसियत यकीनन जूते चप्पल से भी गिरी हुयी है।

दहेज के भूखे भेड़िये कहते हैं कि लड़की के अभिभावक (सरपरस्त) हंसी खुशी से दहैज देते हैं लेकिन आश्चर्य की बात है कि लड़की के बाप को कौन से ऐसी अप्रत्याशित नेमत मिल गयी है जिस से खुश हो कर उस ने बेटी की शादी के मौके पर दानशीलता (सखावत) का दर्या बहा दिया। लेकिन सवाल यह है बाप ने यह खुशी हासिल करने के लिये किसी बेवा (विधुवा) की सहायता क्यों नहीं की, किसी अनाथ (यतीम) की देख भाल क्यों नहीं की, किसी

गरीब की मदद क्यों नहीं की या किसी बीमार का एलाज (उपचार) का प्रबन्ध कर के अपना दामन खुशियों से क्यों नही भर लेता। उसे दुनिया में भी खुशी मिलती और नबी स० के इस फरमान का पात्र (मुस्तहिक) भी बन जाता ''जिस ने किसी मोमिन की एक परेशानी दूर कर दी तो क्यामत (महापरलय) के दिन उल्लाह उस के दुखों में से एक दुख को दूर कर देगा''। शादी के मौके पर लाखों का सामान तोहफे में देने वालों से जब किसी समाजी और जरूरी कामों में खर्च के लिये कहा जाता है तो उन्हें साँप सूँघ जाता है, इस तरह का काम करने से साफ मना कर देते हैं। लड़की वाले अपने दामाद और समधी को जो कुछ भी देते हैं वह सिर्फ रिश्वत है क्यों कि उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि अगर यह सामान रिश्वत के नाम पर नहीं दिया जाये गा तो उस की बेटी के हाथ पीले नहीं हों गे। जिस तरह एक मामूली आदमी जब किसी काम से किसी सरकारी विभाग में जाता है तो उस दफतर के बार बार चक्कर लगाने से बचने के लिये खुशी से ''रिश्वत'' दे देता है। वह जानता है कि अगर वह रिश्वत का आफर नहीं करे गा तो उसके काम में तरह तरह के अड़चन और रोड़े डाले जाते रहेंगे इसी रिश्वत की देन है कि अच्छी और नेक सीरत वाली लड़कियां अपने बाप के सर का बोझ बनी हुयी हैं क्योंकि उनके बाप के पास रिश्वत देने के लिये कुछ भी नहीं है। आप मालदार ठहरे और तोहफे के बहाने दहेज दे दिया, यह तो आपकी अदा ठेहरी, लेकिन वह गरीब जो आधी रोटी के लिये दर दर की ठोकर खा रहा है, क्या करे। ऐसे गरीब आदमी को अपनी बेटी की शादी के लिये कोई उधार भी नहीं दे गा और अगर कोई दे भी तो फिर कहां से वापस करे गा? तो क्या गरीबी के जुर्म की सजा यही है कि आत्म हत्या कर ले, या अपनी बेटी का गला दबाकर काम तमाम कर दे, या फिर अपनी बिन बियाही बेटी को घर में बिठा कर अपनी किस्मत को कोस्ता रहे। हदये और तोहफे ने लोगों को इतना पत्थर दिल और बेरहम (क्रूर) बना दिया है कि बेटी चाहे बूढ़ी ही क्यों न हो जाये लेकिन वह दहेज बनाम तोहफा के बगैर शादी के लिये तैयार नहीं।

किसी चीज पर रोक का उसूल यह है कि अगर एक मुबाह काम किसी बड़ी खराबी का सबब बन रहा हो तो उसको छोड़ना ज्यादा बेहतर है। इस उसूल के अनुसार शादी के मौक़े पर तोहफा न देना ही बेहतर है क्योंकि खुशी के नाम पर दिया जाने वाला तोहफा गरीबों यहां तक कि मालदारों के लिये भी जान का जंजाल बन चुका है जिसकी वजह से पता नहीं कितनी लड़कियां बुढ़ापे की दहलीज़ पर कदम रख चुकी हैं। अब आप ही बतायें कि यह तोहफा कितनी बड़ी खराबी का सबब बन रहा है और किस तरह लड़की के बाप के लिये अज़ाब बन गया है। सिर्फ इतना ही नहीं यही हदया और तोहफा न आने के सबब कितनी ही बेटियों की जिंदगी अजीरन हो चुकी है और असंख्य (बेशुमार) दुलहनों के शरीर पर तेल छिड़क कर जला दिया गया और कितनी ही लड़कियों को मौत के घाट उतार दिया गया। कुरआन कहता है बेरहम दिलों के लिये बर्बादी हैं, ऐ अल्लाह मेरी कौम को हिदायत दे क्योंकि वह नहीं जानते। क्या इतनी खराबियों और बुराइयों के बावजूद दहेज के पचधर और समर्थक ओलमा तोहफा के नाम पर दहेज की वकालत करेंगे? और दहेज की वैधता को अपने अहंकार का मस्ला बना कर रोक थाम के उसूल को अपनी जूतियों की

नोक पर रखेंगे। ऐ अल्लाह मुसलमानों के ओलमा और इमामों को हिदायत दे। सब जानते हैं कि तोहफा देना सुन्नत है और लड़कियों को वरासत में हिस्सा देना फर्ज। तो क्या सुन्नत की वकालत करने वाले वरासत के फर्ज होने या उसे लागू करने की भी वकालत करेंगे? किसी को तोहफा देने का इतना ही शौक है तो अपनी लड़की को अधिकार देकर यह शौक क्यों नहीं पूरा करता, तोहफे के नाम पर कुछ मामूली चीज़ें दे देना अक़ल के मुताबिक लगता है लेकिन तोहफे में पैसा गाड़ी घोड़ा देना अक़्ल और समझ से दूर की बात है अर्थात इसमें कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है।

खुशी के नाम पर पैसा देने के बारे में एक उपदेशपूर्ण (इबरत नाक) और तकलीफदेह वाक्या बयान करता हूं, मेरे एक दोस्त ने जो सऊदी में इस्लाम की तब्लीग का काम करते हैं, उन्हों अपने भाई की शादी में दावत दी, मैंने पूछा कि दहेज में क्या मिल रहा है तो कहा कि मैंने कुछ मांगा नहीं है, मैंने कहा कुछ तो दे ही रहा होगा उन्होंने कहा, हां। कुछ बुरी रस्मों को देखते हुये मैं शादी में नहीं गया लेकिन बारातियों से पता चला कि जब लड़की के बाप ने खुशी से पैसे लाकर दिये तो इस पर लड़के वाले गुस्सा हो गये और कहने लगे कि तुम मेरी बेइज्जती कर रहे हो! सवाल यह है कि जब वह खुशी से दे रहा है तो चाहे अकेले में दे यह भरी महफिल में, इसमें गुस्सा होने वाली कौन सी बात हो गयी लेकिन दिल में छुपा हुआ चोर बाहर निकल आया। भरी महफिल में पैसे लेने से इंकार ऐसे ही है जैसे कि सरे बाज़ार दूसरे लोग रिश्वत लेने से इनकार कर देते हैं। मुहम्मद स० के फरमान के मुताबिक गुनाह यह है कि वह तुम्हारे दिल में खटके और तुम यह न चाहो कि लोगों को इस की भनक लगे। जब ऐसी बात है तो तोहफा देने वाले चुपके से क्यों नहीं तोहफा देते ताकि यह तोहफा गरीबों के लिये जान का जंजाल न बन जाये। इसमें भी दिखावा है इस लिये तोहफा देने वाला यह चाहता है कि उसके तोहफे की खूब चर्चा हो। यहां यह सवाल पैदा होता है कि क्या सिर्फ शादी ही के दिन तोहफा देना सुन्नत है या इस दिन का तोहफा दूसरे दिनों की बनिस्बत(अपेक्षा) ज्यादा बेहतर और अफजल है, बाकी पूरी जिंदगी में तोहफा देना अवैध और हराम है? अगर हराम नहीं तो दूसरे मौके पर इस सुन्नत का प्रदर्शन या अमल क्यों नहीं किया जाता। बेटी की शादी के मौके पर तोहफे की बारिश करने वाले कुछ लोग अकीका की दावत में इस लिये नहीं जाते हैं कि कहीं सौ दो सौ रूपये के कपड़े न खरीदने पड़ जायें, यह है हमारे समाज के तमाशे। अक़ीक़ा के मौके पर हदया की बात छोड़ दें, वही दमाद जिस को शादी पर हजारों और लाखों का सामान दिया गया था जब ससुराल आता है तो ससुर और घर वालों की यही इच्छा होती है कि दुल्हा विदाई ने लेता तो बेहतर होता खुशी से दहेज देने वालों को कभी यह तौफीक होती है कि गरीब रिश्तेदार को उसकी जरूरत के वक्त मदद कर दें, हदया या तोहफा देना तो दूर की बात है, सख्त जरूरत के वक्त इस डर से उधार भी नहीं देते हैं कि कहीं डूब न जाये या न मिले। दिल की खुशी का नाम खुशी है और दिल की खुशी के बगैर किसी का माल खाना दूसरे के लिये जाइज नहीं। मुहम्मद स० ने फरमायाः किसी आदमी का माल उसकी तरफ से हंसी खुशी इजाजत मिल जाने के बाद ही जाइज़ है। इस खुशी की मिसाल ऐसे ही है कि कोई लुटेरा घर में घुस आये और हाथ में बंदूक लेकर घर के मालिक से कहे कि

खुशी से ५०० रू दे दो तो मैं शराफत से किसी को तकलीफ पहुँचाये बगैर घर से निकल जाऊँ गा। पाठक गण! आप ही बतायें कि घर का मालिक इसके अलावा और क्या कह सकता है कि ५०० ले लो और घर से निकल जाओ तो क्या आप भी इसको खुशी का नाम देकर जाइज (वैध) ठहरायें गे?

जुनूं का नाम खिरद रख दिया खिरद का जुनूं

जो चाहे आप का हुस्न करिश्मा साज़ करे

कुछ ओलमा कहते हैं कि खुशी से दिये जाने वाले सामान को लेने में क्या बुराई है? जब कि नबी स० ने फरमाया तुम में से जो शादी करने की ताकत रखे उसे शादी कर लेनी चाहिये। इस फरमान के अनुसार घर की जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी पति पर है। और एक अच्छे इंसान की पहचान यह है कि वह दूसरों की दौलत पर ललचायी निगाह नहीं डालता। इसी वजह से ऐसे लोग दूसरों की नजर में अच्छे माने जाते हैं लेकिन यहां तो मामला बहुत अजीब है कि दुल्हा तो कम लेकिन उसका बाप लालच से इतना धुत हो जाता है कि अगर उस का बस चले तो लड़की के बाप के शरीर से कपड़ा भी उतार ले। हदीस की किताब में बयान किया गया है कि एक आदमी नबी स० के पास आया और कहा ऐ अल्लाह के संदेष्टा (रसूल) मुझे कोई ऐसा कर्म बता दीजिये कि अगर मैं उसको कर लूं तो अल्लाह मुझ से मुहब्बत करने लगे और लोग भी मुझसे मुहब्बत करने लगें, आप ने फरमाया दुनिया से बेरगबत हो जा, अल्लाह तुझ से मुहब्बत करेगा और लोगों के माल व दौलत से दूर रहो, लोग तुझे पसंद करेंगे।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के लिए

ईदाना फण्ड जमा करना हरगिज़ न भूलें

ईद की खुशी के मौक़े पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस को न भूलें। जिस तरह आप ईद के मौक़े पर अपने बच्चों को ईदी दे कर उनकी खुशियों को बढ़ाते हैं उसी तरह मर्कज़ी जमीअत को ईदाना फन्ड देना न भूलें। सुबाई, ज़िलई और मकामी जमीअत और मदर्सों के ज़िम्मेदारान और इमामों से अपील है कि मस्जिदों और ईदगाहों में जमीअत के लिये ज़रूर अपील करें और जो रक़म मर्कज़ी जमीअत के लिये प्राप्त हो उसको चेक या ड्राफ्ट के द्वारा जमीअत को भेज दें ताकि आप का ईदाना फन्ड जमीअत व जमाअत के महत्वपूर्ण योजनाओं को पूरा करने में अहम रोल अदा कर सके।

चेक या ड्राफ्ट इस नाम से बनवायें।

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

चेक या ड्राफ्ट भेजने का पता:-

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-6

011-23273407 Fax 011-23246613

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई अपने इस्लाम को बेहतर बना ले तो हर नेकी जो वह करता है उसके बदले में उसके लिये दस से सौ गुना तक लिख दिया जाता है और हर बुराई जिसको वह करता है तो उसके बराबर लिख दिया जाता है। (बुखारी४२, मुस्लिम१२९)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से किसी के पास शैतान आता है फिर कहता है कि फुलां चीज़ को किस ने पैदा किया? फुलां चीज़ को किसने पैदा किया यहां तक कि शैतान कहता है कि तुम्हारे रब को किसने पैदा किया? जब वह किसी को इस तरह के वसवसा में डाले तो उसे अल्लाह से पनाह मांगनी चाहिये और शैतानी ख्याल को छोड़ दे। (बुखारी३२७६, मुस्लिम१३४)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब अल्लाह बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल से कहता है बेशक अल्लाह फुलां से मुहब्बत करता है इसलिये तू भी उससे मुहब्बत करो फिर जिब्रईल भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं। फिर जिब्रईल आसमान वालों को पुकारने लगते हैं कि अल्लाह तआला फुलां शख्स से मुहब्बत करता है इसलिये तुम सब लोग उससे मुहब्बत करो, पुकार लगाने के बाद पूरे आसमान वाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं इसके बाद पूरी धरती वाले उसको मक़बूल समझते हैं। (बुखारीः ३२०९, मुस्लिमः २६३७)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला तुम में से किसी ऐसे शख्स की नमाज़ कुबूल नहीं करता जिसे वजू की ज़रूरत हो यहां तक कि वह वुजू कर ले। (बुखारी,६९५४, मुस्लिम २२५)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः भला बताओ अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो और वह उसमें रोज़ाना पांच बार नहाता हो तो क्या उसके शरीर पर मैल बाक़ी रहेगा? लोगों ने कहाः उसके शरीर पर थोड़ी सी भी मैल बाकी नहीं रहे गी। यही मिसाल पांचों नमाज़ों की है। अल्लाह तआला इन नमाज़ों के बदले गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी ५२८, मुस्लिम ६६७, शब्द मुस्लिम के हैं)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सवाल किया गयाः कौन सा अमल सबसे अफज़ल है? तो आप ने फरमायाः अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान। पूछा गयाः फिर कौन सा अमल अफज़ल है? आपने फरमाया अल्लाह की राह में जिहाद (अत्याचार और जुल्म व जियादती के खिलाफ आवाज़ उठाना और उसको रोकना) और असहाय व गरीबों की मदद करना पूछा गया फिर कौन सा अमल अफज़ल है? आपने फरमायाः हज्जे मबरूर (बुखारी २६, मुस्लिम ८३)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो वह अपने पड़ोसी को दुख न दे और जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो उसे अपने मेहमान का सम्मान करना चाहिये और जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो उसे अच्छी बात कहनी चाहिये या खामोश रहना चाहिये। (बुखारी ६१३६, मुस्लिम ४७)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हमारा रब आसमाने दुनिया पर हर रात को उस वक़्त उतरता है जब रात की आखिरी तिहाई बाकी रहती है कहता है जो मुझे पुकारे गा तो उसकी दुआ कुबूल करूंगा जो मुझसे मांगे गा तो मैं उसको दूंगा जो मुझसे मआफी तलब करेगा तो मैं उसको मआफ कर दूंगा। (बुखारी, ११४५, मुस्लिम ७५८)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला ने कहाः आदम की औलाद मुझे दुख पहुंचाती है वह जमाने को गाली देती है और जमाना मैं ही हूं मामले मेरे हाथ में है मैं ही रात और दिन को बदलता हूं। (बुखारी ७४६१, मुस्लिम २२४६)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नमाज़ में सफों को बराबर रखो क्यों कि नमाज़ का हुस्न सफों को बराबर रखने में है। (बुखारी ७२२ मुस्लिम ४३५)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब मुर्ग की बांग (आवाज़) सुनो तो अल्लाह से उसके फज्ल का सवाल करो क्योंकि उसने फरिश्ते को देखा है और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि उसने शैतान को देखा है। (बुखारी ३३०३, मुस्लिम २७२६)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मेरे खलील सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे हर महीने की तीन तारीखों में रोज़ा रखने की वसिय्यत की थी, और चाश्त की दो रकअत पढ़ने की वसिय्यत की थी और सोने से पहले वित्र पढ़ लेने की भी वसियत की थी। (बुखारी, १६८१ मुस्लिम ७२१)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल किस तरह के सदके में ज़्यादा सवाब है? आपने फरमायाः जिसे तुम सेहत के साथ बुख्ल के बावजूद करो तुम्हें एक तरफ फकीरी का डर हो और दूसरी तरफ मालदार बनने की तमन्ना और उस सदक खैरात में ढील नहीं होनी चाहिये कि जब जान हलक तक आ जाये तो उस वक़्त तू कहने लगे कि फुलां के लिये इतना और फुलां के लिए इतना हालांकि अब तो वह फुलां का हो चुका है। (बुखारी १४१६, मुस्लिम १०३२)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम जनाज़ा को तेज़ी से लेकर चलो क्योंकि अगर वह नेक है तो तुम उसको भलाई की तरफ नजदीक कर रहे हो और अरग इसके सिवा है तो एक बुराई है जिसे तुम अपनी गर्देनों से उतार रहे हो। (बुखारी १३१५, मुस्लिम ६४४)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला का हर मुसलमान पर हक़ है कि हर सात दिन में एक दिन नहाये, उस दिन अपने सर को और जिस्म को गुस्ल दे। (बुखारी ८९७ मुस्लिम ८४९)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कसम खाने से सामान बिक जाती है लेकिन कसम बरकत को मिटा देती है। (बुखारी २०८७, मुस्लिम १६०६)

अबू हरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी तमाम उम्मत को मआफ कर दिया जायेगा लेकिन खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वालों को मआफ नहीं किया जायेगा और खुल्लम खुल्ला गुनाह करने में यह भी शामिल हैं कि एक शख्स रात को कोई (गुनाह) का काम करे और अल्लाह ने उसके गुनाह को छुपा लिया है मगर सुबह होने पर वह कहने लगे कि ऐ फुलां मैंने कल रात फुलां फुलां काम किया था, रात गुज़र गयी थी, उसके रब ने उसके गुनाह को छुपाये रखा और जब सुबह हुयी तो उसने खुद ही अल्लाह के पर्दे को छुपा दिया। (बुखारी ६०६९, मुस्लिम २९९०)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतान जंजीरों में जकड़ दिये जाते हैं। (बुखारी ३२७७ मुस्लिम १०७९)

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई भूल कर खा पी ले तो उसे चाहिये कि अपना रोज़ा पूरा करे क्योंकि उसे अल्लाह ने खिलाया पिलाया है। (बुखारी १९३३, मुस्लिम ११५५)

२४. अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने इस घर (काबा) का हज्ज किया और उसमें न शहवत की बात की और न कोई गुनाह का काम किया तो वह उस दिन की तरह वापस होगा जिस दिन उस की मां ने उसे जना किया था। (बुखारी १८१९, मुस्लिम १३५०)

२५. अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः चार चीजों की बुनियाद पर औरत से शादी की जाती है उसके माल की वजह से उसके हसब नसब की वजह से और उसके दीन की वजह से और तुम दीनदार औरत से शादी करके कामयाबी हासिल करो, नहीं तो तुम्हारे हाथों में मिटटी लगेगी। (बुखारी ५०६० मुस्लिम १४६६)

२६. अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे घर और मेरे मिंबर के बीच की जमीन जन्नत के बागों में से एक बाग है और मेरा मिंबर मेरे हौज़ के ऊपर होगा। (बुखारी ११९६, मुस्लिम १३९१)

२७. अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सवार पैदल चलने वाले से सलाम करेगा, पैदल चलने वाला बैठने वाले से और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों से सलाम करेंगे। (बुखारी २१६० मुस्लिम ६२३२)

इस्लाम में पशुओं के अधिकार

मो० निसार मो० यासीन

इस्लाम एक सर्वव्यापक धर्म है। वह विश्व में शान्ति का इच्छुक और उसका प्रचारक है। उसने समस्त प्राणियो में सुख और शान्ति पैदा करने के लिए प्रत्येक के अधिकार को विस्तार से वर्णन कर दिया है और हर एक के अधिकार की सीमाएं हैं जिनसे आगे नहीं बढ़ना है। मनुष्यों के साथ इस्लाम ने हर प्राणी का ख्याल रखा है और उनके अधिकार को बतलाया है। पशु भी एक प्राणी है जिसके साथ इस्लाम ने सदव्यवहार करने पर बहुत ज़ोर दिया है। इस्लाम में पशुओं के क्या अधिकार हैं? उनमें से कुछ महत्वपूर्ण अधिकारों का यहां वर्णन किया जा रहा है।

१. पशुओं के आराम का ख्याल रखनाः पशुओं के अधिकार में सबसे महत्वपूर्ण अधिकार है कि उनके आराम और सुख का पूरा पूरा ख्याल रखा जाये। इसलिए जिन पशुओं से किसी प्रकार का सेवा और लाभ उठाया जाता है, उन्हें समय से खिलाया पिलाया जाये, उनके रहने सहने की अच्छी व्यवस्था की जाये, बीमार होने पर इलाज कराया जाये, उनसे उनकी ताकत से अधिक काम न लिया जाये और इसी प्रकार जब वह काम करने के लायक न हों तो उन्हें मारकर भगाना नहीं चाहिये। एक बार आप स०अ०व० एक अन्सारी के बाग में गये उसमें एक ऊंट था वह आप को देखकर बिलबिलाया और आंख आंसूओं से भर गयी आप स०अ०व० उसके पास गये और उसकी कनपटी पर हाथ फेरा और पूछा यह किसका ऊंट है? एक अनसारी नवयुवक आगे बढ़कर बोला मेरा है। आप स०अ०व० ने कहा क्या इस जानवर के बारे में अल्लाह से डरते नहीं जिसका मालिक अल्लाह ने तुम्हें बनाया इस ऊंट ने मुझसे शिकायत की है कि तुम उसे भूखा रखते हो एक और हदीस में है अगर बसंत के मौसम में यात्रा करो तो धीरे धीरे चलो और पशुओं को उससे लाभ उठाने का अवसर दो और अगर सूखा पड़ा हो तो पशुओं को तेज़ चलाओ। (अबू दावूद २५६९)

पशुओं को अच्छे ढंग से ज़बह करना : इस्लाम केवल उन पशुओं को ज़बह करने का हुक्म देता है जो जानवर हलाल और खाने योग्य हैं लेकिन एक बात का विशेष ख्याल रखा जाये कि उन्हें अच्छे ढंग से जबह किया जाये। नबी स०अ०व० ने फरमायाः अल्लाह ने हर चीज़ (काम) पर भलाई करने को लिखा है। इसलिए जब जबह करो तो अच्छे ढंग से ज़बह करो तुम में से जो कोई ज़बह करना चाहे तो उसे चाहिए कि चाकू तेज कर ले और अपने जानवर को आराम पहुंचाये (मुस्लिम ५०५३ - हदीस का आंशिक भाग)

कुछ हदीसों में है कि जानवर के सामने चाकू तेज़ न किया जाये और इसी तरह जानवर के सामने जानवर को ज़बह न किया जाये इससे जानवर को कष्ट पहुंचता है।

इसी तरह जानवर को झटके से ज़बह नहीं करना चाहिये।

पशुओं को कष्ट न देनाः

पशुओं का एक अधिकार यह भी है कि उन्हें कष्ट न दिया जाये। माननीय रबी पुत्र मसऊद कहते हैं कि एक सफर में हम रसूल स०अ०व० के साथ थे आप निपटने (ज़रूरत) के लिए बाहर गये थे। हमने एक लाल चिड़िया देखा जिसके साथ उसके दो बच्चे भी थे। हमने उन बच्चों को पकड़ लिया तो वह दुख से उनके ऊपर मंडलाने लगी। इतने में नबी स०अ०व० आ गये तो आपने कहा इस चिड़िया से उसके बच्चों को छीन कर किसने उसे कष्ट पहुंचाया उसके बच्चों को लौटा दो उसके बच्चों को लौटा दो (अबू दाऊद २६७५)

पशुओं को अनावश्यक कत्ल न करनाः इस्लाम ने अनावश्यक जानवरों को मारने और कत्ल करने को अपराध करार दिया है। रसूल स०अ०व० ने कहा किसी ने अगर चिड़िया, या उससे भी छोटे जानवर को नाहक (अनावश्यक) जबह किया तो वह इसके बारे में पूछा जायेगा। सहाबा सहबा ने हैरत से पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! उसका अधिकार क्या है? आपने कहाः उसे ज़बह करे तो खाले, यह नहीं कि उसे काट कर फेंक दे। (मुसतदरक हाकिम)

निशानेबाज़ी के लिए जानवर का प्रयोग न करनाः

किसी जानवर को बांधकर या उसको सामने करके निशाना लगाना या ठीक करना इस्लाम में अवैध है रसूल स०अ०व० ने वर्णन किया तुम किसी जानवर को कदापि निशाना मत बनाओ। (मुस्लिम ५०५६)

आग में न जलानाः पशुओं और जानवरों को आग में जलाने से इस्लाम ने सख्ती से रोका है। हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र मसऊद कहते हैं कि एक यात्रा में आपने चिड़िया का एक बिल, जिसे हमने जला दिया था, देखकर पूछाः यह हरकत किसने की है? हमने उत्तर दिया हमने तो आपने कहा किसी जानदार को आग का अज़ाब और सजा देना सिर्फ आग के मालिक का अधिकर है। (बुखारीः३०१६)

पशुओं को आपस में न लड़ानाः

पशुओं को आपस में लड़ाना एक अनोखा खेल बन चुका है। लोग इससे आनन्दित होते हैं। अरबों के इसी चीज़ को देखकर नबी स०अ०व० ने जानवरों को आपस में लड़ाने से सख्ती से मना कर दिया। (अबू दाऊद २५६२)

क्योंकि जानवरों की बाज़ी में वे घायल और ज़ख्मी होकर काफी कष्ट उठाते और सहते हैं।

यह थे जानवरों के कुछ महत्वपूर्ण अधिकार जो इस बात को प्रमाणित करता है कि इस्लाम ने जहां मानव जाति को सुख शान्ति और उच्च जीवन प्रदान किया गया वहीं पुशओं को इससे वंचित नहीं किया।

आज ज़रूरत है कि हम इस्लाम की इन शिक्षाओं को दुनिया वालों के सामने प्रस्तुत करें ताकि लोग इस्लाम की हकीकत से बाखबर हो सकें।

अल्लाह हम सबको इन शिक्षाओं को फैलाने की तौफीक दे। आमीन

❑ ❑ ❑

सूरेह फ़ातिहा का अर्थ

एन. अहमद

सूरे फातिहा कुरआन की पहली सूरत है, इस सूरत को हर नमाज़ की हर रकात में पढ़ने का हुक्म दिया गया है। हर नमाज़ी इस सूरत को रोज़ाना पढ़ता है, लेकिन अधिकतर तादाद उन लोगों की है जो इस सूरह का मतलब नहीं जानते हैं। इस सूरत में अल्लाह का पूरा पूरा परिचय देने के साथ, इन्सान को यह तालीम दी गयी है कि वह केवल अल्लाह की इबादत करे वह केवल अल्लाह ही से मदद मांगे, और उस रास्ते को अपनाए जो इन्सान को सफलता की ओर ले जाता है। और उस रास्ते से बचे जो इन्सान के लिये घाटा ही घाटा है। यहाँ सूरे फातिहा का अनुवाद पेश किया जा रहा है ताकि पाठकों को यह मालूम हो जाए कि कुरआन की पहली सूरत में क्या कहा गया है और अल्लाह ने अपने बन्दों को क्या शिक्षा दी है।

अनुवादः '' सब तारीफ अल्लाह के लिये है, जो तमाम संसार का पालने वाला है, बड़ा मेहरबान अत्यन्त रहम करने वाला बदले के दिन (यानी क्यामत) का मालिक है, हम सिर्फ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ तुम ही से मदद चाहते हैं, हमें सीधी और सच्ची राह दिखा, उन लोगों की राह जिन पर तूने इनआम किया, उनकी नहीं जिन पर गजब किया गया और न गुम्राहों की। (सूरे फातिहा-१-७)

कुरआन की इस सूरत में जो शिक्षा दी गयी है उसको सारांश में पेश किया जा रहा है।

१. अल्लाह मरने के बाद हर शख्स को उसके अच्छे और बुरे कर्म का फल देगा।

२. सिर्फ एक अल्लाह की इबादत के सिवा किसी और की इबादत जायज़ नहीं, और न ही उसके अलावा किसी और से मदद मांगी जा सकती है।

३. इस संसार का पैदा करने वाला, रोज़ी देने वाला और इस संसार को चलाने वाला केवल अल्लाह है।

४. अल्लाह और रसूल के आदेशों का पालन ही सच्चा मार्ग है, इसके अलावा अल्लाह के नज़दीक कोई रास्ता प्रिय नहीं है इसलिए हर इन्सान को वही मार्ग अपनाना चाहिए जो उसे सफलता की ओर ले जाए।

५. अल्लाह तआला अपने बन्दे के लिये बड़ा दयालु है वह इस संसार के हर इन्सान को अपनी कृपा से रोज़ी देता है।

जो अरबी नहीं जानते वह उर्दू हिन्दी अंग्रेजी और अन्य भाषाओं की मदद से कुरआन के अर्थ को अच्छी तरह से समझ सकते हैं। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से प्रकाशित तफसीर अह्सनुल बयान कुरआन को समझने के लिये उर्दू और हिन्दी जानने वालों के लिये बहुत ही सहायक और लाभकारी है। इसमें आसान तर्जुमा के साथ संक्षिप्त में तफसीर भी दी गई है। कुरआन की तिलावत के साथ कुरआन को समझने के लिये यह तफसीर सबके लिये बहुत ही लाभकारी है।